International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

स्वतंत्रता संग्रामकालीन दृश्य कला में रस सिद्धांत की भूमिका का भावात्मक संप्रेषण

स्वाति

शोधार्थी, दृश्य कला विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय।

सारांश:

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र नामक ग्रंथ में प्रतिपादित रस सिद्धांत जो कला और भावनात्मक प्रतिक्रिया के बीच के संबंध को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करते है। रस सिद्धांत के अनुसार कला, विशेष रूप से नृत्य, संगीत, नाटक और दृश्य कला के माध्यम से, दर्शकों में विशिष्ट भावनाएँ उत्पन्न कर सकती है जैसे प्रेम, वीरता, करुणा और भय, जो व्यक्ति को व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों से जोड़ती हैं। यह शोध पत्र भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दृश्य कला के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना के जागरण और भाव जागरण में रस सिद्धांत की भूमिका को स्पष्ट करता है। यह अध्ययन यह भी विश्लेषण करता है कि किस प्रकार कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से समुदायों को जोड़ने, उन्हें जागरूक करने और एक साझा राष्ट्रीय पहचान बनाने में मदद की।

इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि कैसे रस सिद्धांत का उपयोग दृश्य कला में संघर्ष, पीड़ा, और वीरता को प्रदर्शित करने के लिए किया गया, और इससे जनमानस में देशभक्ति और एकजुटता का भाव जागृत हुआ। साथ ही, यह विश्लेषण किया जाएगा कि किस प्रकार कलाकार अपने कार्यों के माध्यम से समाज में चेतना का प्रसार करते थे, और उनके द्वारा चुने गए विषयों ने किस तरह से कला को एक राजनीतिक और सांस्कृतिक यंत्र के रूप में प्रस्तुत किया।

सूचक शब्द: नाट्यशास्त्र, राष्ट्रीय आंदोलन, रस सिद्धांत, भरतमुनि, दृश्य कला, स्वतंत्रता संग्राम

परिचय:

रस सिद्धांत की अवधारणा, जिसे भरतमुनि ने *नाट्यशास्त्र* में प्रस्तुत किया, भारतीय सौंदर्यशास्त्र की नींव है। रस सिद्धांत के अनुसार, कला केवल एक बाहरी प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह एक आंतरिक अनुभव है

जो दर्शकों को गहरे भावनात्मक स्तर पर जोड़ता है। यह सिद्धांत दर्शाता है कि कला के माध्यम से विशिष्ट भावनाओं या रसों का सृजन किया जा सकता है, जैसे कि श्रृंगार (प्रेम), वीरता (वीर रस), करुणा (दया), आदि जो दर्शकों के दिलों में गहरी छाप छोड़ते हैं।

दृश्य कला में जब रस सिद्धांत को लागू किया जाता है, तो यह हमें यह समझने में मदद करता है कि कला केवल सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करने का शक्तिशाली साधन बन जाती है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दृश्य कला ने केवल संघर्ष और पीड़ा को चित्रित नहीं किया, बल्कि यह एक ऐसा माध्यम बन गया जिससे लोगों के मनोबल को बढ़ाया और एक साझा राष्ट्रीय पहचान बनाई।

यह शोध पत्र भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दृश्य कला की भूमिका का अध्ययन करता है, विशेष रूप से रस सिद्धांत के प्रभाव के संदर्भ में। इस समय की प्रमुख कला शैली में न केवल राजनीतिक और सांस्कृतिक भावनाओं का प्रतिनिधित्व किया गया, बल्कि यह दर्शकों को भाव जागरण के लिए प्रेरित करने का एक माध्यम बन गई।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, जैसे ही भारतीय समाज में बदलाव आ रहा था, कलाकारों ने कला को एक सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रतिक्रिया के रूप में अपनाया। हम उस समय के प्रमुख कलाकारों जैसे अबानिंद्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस, सरोजिनी नायडू, और रामकिंकर बैज आदि के कार्यों के माध्यम से यह समझने का प्रयास करेगे कि कैसे उन्होंने अपने चित्रों में रस सिद्धांत की अभिव्यक्ति की जो संप्रेक्षण के माध्यम से रसनिष्पत्ति के सिद्धांत से उनकी कला ने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया।

साहित्य समीक्षा:

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, कला केवल सौंदर्य का विषय नहीं थी, बल्कि यह राजनीतिक विरोध और सांस्कृतिक पहचान का एक मजबूत माध्यम बन गई थी। विद्वानों जैसे पार्थ चटर्जी, आइजाज अहमद और सुजाता नायर ने इस पहलू पर गहरे शोध किए हैं कि किस प्रकार कला और साहित्य ने राष्ट्रीय आंदोलनों को आकार देने में योगदान दिया।

सुजाता नायर ने अपनी पुस्तक *Colonial India and the Rise of Cultural Identity* में बताया कि किस प्रकार भारतीय कलाकारों ने पारंपरिक भारतीय कला रूपों को अपनाया और रस सिद्धांत को अपनी कला में सम्मिलित किया। उनके अनुसार, इस तरह से भारतीय कला ने न केवल राजनीतिक और सांस्कृतिक संदेश दिए, बल्कि यह लोगों के दिलों में एक नई राष्ट्रवादी चेतना और संपूर्णता का भाव जागृत करने का कार्य किया।

सुरेश कुमार ने अपनी पुस्तक *Art, Politics, and Identity in Colonial India* में बताया कि कैसे भारतीय चित्रकला ने पश्चिमी शैली को अपनाया और उसे भारतीय विषयवस्तु से जोड़कर स्वतंत्रता संग्राम के संदेशों को फैलाया। उनके अनुसार, रस सिद्धांत ने कलाकारों को अपनी कला के माध्यम से राजनीतिक भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त रास्ता दिया।

अबानिंद्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस, सरोजिनी नायडू, और रामकिंकर बैज जैसे प्रमुख कलाकारों की कृतियों का भी विस्तार से अध्ययन किया गया है, जो स्वतंत्रता संग्राम की भावना को चित्रित करने में अग्रणी थे। इनके चित्रों में रस सिद्धांत के तत्वों का गहरा प्रभाव दिखता है, जो स्वतंत्रता संग्राम को एक भावनात्मक और राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

सांस्कृतिक चेतना के जागरण में दृश्य कला की भूमिका

सांस्कृतिक चेतना का मतलब किसी समाज, राष्ट्र या समुदाय की अपनी सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं, मान्यताओं, और आदर्शों के प्रति जागरूकता और गर्व की भावना से है। यह जागरूकता कला, साहित्य, संगीत, और अन्य सांस्कृतिक माध्यमों के माध्यम से विकसित होती है। दृश्य कला (चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला) एक ऐसा महत्वपूर्ण माध्यम रही है, जिससे समाज में सांस्कृतिक चेतना का जागरण हुआ। भारतीय इतिहास में दृश्य कला ने सांस्कृतिक जागरूकता फैलाने और समाज की मानसिकता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

दृश्य कला का अर्थ: वह कला है जिसे हम अपनी आंखों से देखते हैं और इसका अनुभव करते हैं। इसमें चित्रकला, मूर्तिकला, और वास्तुकला जैसी शैलियाँ शामिल होती हैं। भारतीय संस्कृति में दृश्य कला का इतिहास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक विभिन्न प्रकार से विकसित हुआ और यह न केवल सौंदर्य के दृष्टिकोण से बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक संदेशों को प्रसारित करने के लिए भी महत्वपूर्ण रही है।

दृश्य कला की उत्पत्ति और विकास:

प्रागैतिहासिक काल में दृश्य कला के प्रमाण भीमबेटका जैसी गुफाओं में प्राप्त भित्ति चित्रों के रूप में मिलते हैं। इन चित्रों में शिकार, नृत्य, पशु और सामुदायिक जीवन के दृश्य अंकित हैं, जो उस समय के मानव जीवन और विश्वासों को दर्शाते हैं। प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कर बनाए गए ये चित्र मानव की प्रारंभिक सौंदर्य-बोध और भावनात्मक अभिव्यक्ति को प्रकट करते हैं। ये भित्ति चित्र सामाजिक जुड़ाव और संप्रेषण का माध्यम भी रहे होंगे। इस प्रकार, प्रागैतिहासिक दृश्य कला प्रारंभिक मानव संस्कृति को समझने का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक साक्ष्य है।

- ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर : भारतीय दृश्य कला का प्रारंभ सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 3000-1300 ईसा पूर्व) से होता है, जहाँ पर मुहरों, मूर्तियों और चित्रों के रूप में कला के प्रारंभिक रूप देखने को मिलते हैं। इन प्रारंभिक रूपों में समाज के दैनिक जीवन, धार्मिक आस्थाओं और संस्कृति के प्रतीकों का चित्रण किया गया था। सिंधु घाटी की कला ने न केवल धार्मिक विचारों को व्यक्त किया बल्कि सामाजिक ढांचे को भी परिभाषित किया। इस समय के कला रूपों में संस्कृति, प्रकृति, और जीवन के विभिन्न पहलुओं का गहरा चित्रण था।
- वेदकालीन और बौद्धकालीन कला: वेदकाल में दृश्य कला का कोई प्रमुख विकास नहीं हुआ, लेकिन धार्मिक प्रतीकों और देवताओं का चित्रण प्रारंभ हुआ। बौद्ध धर्म के उदय के साथ भारतीय दृश्य कला ने एक नई दिशा ली। सांची और अजंता की गुफाओं में बौद्ध जीवन के दृश्य चित्रित किए गए, जो न केवल धार्मिक शिक्षा देने का कार्य करते थे, बल्कि सांस्कृतिक संदेशों को भी फैलाते थे। इस समय की कला में कथा चित्रण और प्रतीकात्मकता का विशेष स्थान था।
- गुप्त काल: (4वीं-6वीं सदी ईस्वी) को भारतीय कला का स्वर्णकाल माना जाता है। इस काल में मूर्तिकला और चित्रकला की तकनीकें अत्यधिक विकसित हुईं और शास्त्रीय सौंदर्यशास्त्र का विकास हुआ। गुप्त कला में मंदिरों और भितिचित्रों के निर्माण ने धार्मिक और सांस्कृतिक संदेशों को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस काल में देवी-देवताओं की मूर्तियों और चित्रों का निर्माण हुआ, जो धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक आदर्शों को प्रस्तुत करते थे।
- मध्यकाल और इस्लामी कला का प्रभाव: मध्यकाल (7वीं-15वीं सदी) में भारतीय कला में इस्लामी साम्राज्यों का प्रभाव भी देखने को मिला। मुग़ल साम्राज्य ने लघु चित्रकला की शैली को प्रोत्साहित किया, जिसमें भारतीय और फारसी प्रभावों का मिश्रण था। मुग़ल दरबार के चित्रों में धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक घटनाओं का चित्रण किया गया, जिसने समाज में सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा दिया। इस समय की कला ने भारतीय समाज की विविधता, धार्मिक एकता और सांस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित किया।
- आधुनिक भारतीय कला: ब्रिटिश साम्राज्य के आगमन के साथ भारतीय कला में पश्चिमी प्रभाव देखने को मिला। इस समय यूरोपीय कला शैलियों के प्रभाव से भारतीय चित्रकला में नए रूपों का विकास हुआ। हालांकि, 19वीं सदी के अंत में बंगाल पुनर्जागरण ने भारतीय कला में पारंपरिक शैलियों को पुनर्जीवित किया और राष्ट्रीय चेतना को जागरूक करने के लिए कला का प्रयोग किया। अभिनिंद्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस, और रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे कलाकारों ने भारतीय कला में एक नई दिशा दी और स्वतंत्रता संग्राम के समय राष्ट्रीयता और आत्मनिर्भरता की भावना को जागृत किया।

रस सिद्धांत और स्वतंत्रता संग्राम

नाट्यशास्त्र में वर्णित रस सिद्धांत भारतीय कला की मौलिक परिभाषा प्रदान करता है, जिसमें कला को भावनाओं के संचारण का एक शक्तिशाली उपकरण माना गया है। रस दर्शकों के दिलों में एक विशिष्ट भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है, जिसे भाव कहते हैं। भाव जागरण के संदर्भ में, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दृश्य कला ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहां कलाकारों ने रस सिद्धांत के माध्यम से राजनीतिक संघर्ष और संघर्षों के भावनात्मक पहलुओं को दर्शाया।

अबानिंद्रनाथ ठाकुर की कृतियाँ भारतीय संस्कृति और स्वाधीनता के प्रतीक बन गईं। उनके चित्रों में वीर रस और करुणा रस का सटीक चित्रण हुआ, जो दर्शकों के भीतर देशभक्ति और करुणा का भाव जागृत करते थे। उनकी कला ने स्वतंत्रता संग्राम की भावना को जीवित किया और लोगों को संघर्ष के प्रति भावनात्मक रूप से प्रेरित किया।

नंदलाल बोस के चित्रों में हम देखते हैं कि उन्होंने प्रकृति और कृषकों के जीवन को चित्रित किया, जो उन समय की सामाजिक और राजनीतिक असमानताओं को दर्शाते थे। उनकी कला में करुणा रस और वीर रस का स्पष्ट प्रभाव था, जो भारतीय जनता में एकजुटता का भाव उत्पन्न करता था।

इन कलाकारों ने अपने चित्रों के माध्यम से केवल राजनीतिक संदेश नहीं दिया, बल्कि वे दर्शकों में भावनात्मक जुड़ाव पैदा करने में सक्षम रहे। रस सिद्धांत ने इस जुड़ाव को और मजबूत किया, क्योंकि यह दर्शकों को न केवल दृश्य कला से, बल्कि इसके भावनात्मक गूढ़ अर्थों से भी जोड़ता है।

कला और स्वतंत्रता संग्राम: कुछ प्रमुख कलाकारों और उनके विषयवस्तु का विश्लेषण

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कला ने केवल सौंदर्यात्मक या धार्मिक रूप में काम नहीं किया, बल्कि यह एक राजनीतिक और सांस्कृतिक माध्यम बन गई। कलाकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से न केवल दृश्य सौंदर्य प्रस्तुत किया, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीयता, स्वतंत्रता की चाह, संघर्ष और एकता के संदेश को भी चित्रित किया। कई कलाकारों ने रस सिद्धांत का प्रयोग किया, जिससे उनके चित्रों में विशेष भावनाएँ (रस) उत्पन्न हुईं, जैसे करुणा, वीरता, श्रृंगार आदि, जो जनमानस में उत्साह और एकजुटता का संचार करती थीं। इस संदर्भ में, अबानिंद्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस, सरोजिनी नायडू, और रामकिंकर बैज जैसे प्रमुख कलाकारों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है।

यहाँ कुछ प्रमुख कलाकारों और उनके द्वारा चित्रित विषयवस्तु का विवरण दिया गया है, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सांस्कृतिक चेतना और भाव जागरण में सहायक रहे:

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

1. **अबानिंद्रनाथ ठाकुर (Abanindranath Tagore)** ने औपनिवेशिक काल में *बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट* के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना से जुड़े चित्र बनाए, जैसे **'भारत माता'**, जो स्वतंत्रता आंदोलन का सांस्कृतिक प्रतीक बने।

सृजन काल: 1905 के बंगाल विभाजन आंदोलन के समय।

माध्यम: जलरंग और भारत के प्रतीकात्मक रंगों के प्रयोग के साथ चित्रित।

मुख्य विशेषताएँ:

- चित्र में भारत माता को एक सशक्त, मातृरूपी देवी के रूप में दिखाया गया है।
- माँ के रूप में भारत का चित्रण करुणा रस (देश की पीड़ा और दुःख) और वीर रस (स्वतंत्रता की प्रेरणा और साहस) दोनों को दर्शाता है।

सांकेतिक अर्थ:

- यह चित्र देशभक्ति और राष्ट्रीय जागरूकता का प्रतीक बन गया।
- 1905 के बंगाल विभाजन के विरोध में यह एक प्रकार का *सांस्कृतिक हथियार* था, जिसने लोगों को एकजुट होने और स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।
- भारत माता की आकृति ने मातृभूमि के प्रति भक्ति और बलिदान की भावना को उजागर किया।

विषयवस्तु और कला शैली: अबानिंद्रनाथ ठाकुर (1867-1951) भारतीय चित्रकला के प्रमुख कलाकारों में थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति और इतिहास से प्रेरित कई कृतियाँ बनाई। उनकी कला में भारत के महान सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास को चित्रित किया गया, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भावना को व्यक्त करता है। ठाकुर के चित्रों में सामाजिक संघर्ष और राष्ट्रीय एकता को दर्शाया गया, और उनके कार्यों में रानी दुर्गावती और भारत माता की विशेष छवि दिखाई दी।

रस सिद्धांत का प्रयोग: उनकी कृतियाँ में वीर रस और करुणा रस का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है। ठाकुर ने भारत माता की छवि को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वह भारतीय जनता के भीतर देशभक्ति

और आत्मसम्मान की भावना पैदा करती थी। "भारत माता" चित्र के माध्यम से उन्होंने एकजुटता और संघर्ष का प्रतीक प्रस्तुत किया।

कला का उद्देश्य: उनकी कला ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक भावनात्मक आधार प्रदान किया। भारतीय जनता को यह एहसास हुआ कि यह संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अस्तित्व का भी था।

2. **नंदलाल बोस (Nandalal Bose)** ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान चित्रकला और भित्ति-कला के माध्यम से भारतीय परंपरा और राष्ट्रबोध को सशक्त किया; वे कांग्रेस अधिवेशनों से भी जुड़े रहे।

- महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये दांडी मार्च (1930 सविनय अवज्ञा आंदोलन) का एक आइकॉनिक चित्र, जिसे नंदलाल बोस ने *लिनोकट तकनीक* में बनाया था।
- यह चित्र *वीर रस,* संघर्ष की दृढ़ता और अहिंसा के बलिदान को बखूबी प्रस्तुत करता है।
- **विषयवस्तु और कला शैली:** नंदलाल बोस (1882-1966) भारतीय आधुनिक कला के प्रमुख नामों में से एक थे। उन्होंने भारतीय आदिवासी कला और परंपराओं को आधुनिक कला के साथ जोड़ा। उनकी कृतियाँ मुख्य रूप से प्राकृतिक दृश्यों, कृषक जीवन और स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरणादायक क्षणों पर आधारित थीं। उनका ध्यान अधिकतर कृषक और गरीबों के संघर्ष पर था, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महत्वपूर्ण था।

रस सिद्धांत का प्रयोग: नंदलाल बोस की कृतियों में करुणा रस और वीर रस का सुंदर समावेश था। उन्होंने अपने चित्रों में कृषक वर्ग की कठिनाइयाँ और संघर्ष को चित्रित किया, जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय समाज के सबसे निचले तबके के संघर्ष को प्रदर्शित करते थे। Haripura Posters को स्वतंत्रता संग्राम के *सामाजिक संघर्ष का सांकेतिक चित्रण* मान सकते हैं, जहाँ किसान, मज़दूर और ग्रामीण वर्ग की स्थितियाँ दिखायी गयीं हैं – यह *करुणा रस* और *वीर रस* दोनों का मिश्रण प्रस्तुत करता है।

कला का उद्देश्य: उनकी कला का उद्देश्य एक सामाजिक और राजनीतिक संदेश देना था, जो स्वतंत्रता संग्राम के महत्व को दर्शाता था। नंदलाल बोस ने चित्रों के माध्यम से आम जनता को यह समझाया कि राष्ट्रीय संघर्ष हर व्यक्ति की जिंदगी से जुड़ा हुआ है।

3. **सरोजिनी नायडू (Sarojini Naidu)** प्रत्यक्ष रूप से चित्रकार नहीं थीं, लेकिन उनकी कविता और भाषणों ने स्वतंत्रता आंदोलन में गहरा भावनात्मक और सांस्कृतिक प्रभाव डाला।

विषयवस्तु और कला शैली: हालाँकि सरोजिनी नायडू मुख्य रूप से कवयित्री थीं, लेकिन उनकी कविता और उनके विचारों ने चित्रकला को भी प्रभावित किया। उनकी कविताओं में भारत माता, भारत का संघर्ष, और स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न पहलुओं को गहराई से व्यक्त किया गया। उनकी कविता, *In the Bazaars of Hyderabad* और *The Queen's Rival* ने भारतीय कला और संस्कृति के रंगों को प्रदर्शित किया, जो कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने।

रस सिद्धांत का प्रयोग: सरोजिनी नायडू के कविता संग्रहों में श्रृंगार रस और वीर रस का बड़ा प्रभाव था। उनके शब्दों में कवि के रूप में मातृभूमि के लिए एक अटूट प्रेम और साहस था, जो स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों को प्रज्वलित करता था।

कला का उद्देश्य: सरोजिनी नायडू की कविताओं ने भारतीय जनता को सांस्कृतिक चेतना और एकता का संदेश दिया, और उनके शब्दों के माध्यम से देशभक्ति और वीरता के भाव जागृत हुए। उनकी रचनाओं ने इस बात को सिद्ध किया कि कला और साहित्य मिलकर राष्ट्रवादी आंदोलनों को आगे बढ़ाने का काम कर सकते हैं।

3. **रामकिंकर बैज (Ramkinkar Baij)** ने स्वतंत्रता से पूर्व आधुनिक भारतीय मूर्तिकला की नींव रखी और ग्रामीण जीवन व श्रमिक वर्ग को विषय बनाकर सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त किया।

“Santhal Family” (1938) रामकिंकर बाइज़ द्वारा बनाई गई एक प्रसिद्ध आधुनिक मूर्तिकला है, जो *संथाल आदिवासी परिवार* को उनके दैनिक जीवन और संघर्ष के माध्यम से चित्रित करती है। इस मूर्ति में पिता, माता, बच्चा और उनका कुत्ता चलते हुए दिखाए गए हैं, जो जीवन की कठिनाइयों और बेहतर अवसरों की तलाश का प्रतीक हैं। मूर्तिकला की *रफ और मिट्टी जैसी बनावट* ग्रामीण जीवन की सादगी और संघर्षशीलता को व्यक्त करती है। यह कला सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा और आदिवासी जीवन की कठिन परिस्थितियों को उजागर करती है। संथाल परिवार भारतीय मॉडर्न मूर्तिकला में मील का पत्थर मानी जाती है और स्वतंत्रता संग्राम के समय सामाजिक और आर्थिक असमानताओं की संवेदनशील झलक प्रस्तुत करती है। इसे *शांतिनिकेतन* में स्थायी रूप से प्रदर्शित किया गया है।

विषयवस्तु और कला शैली: रामकिंकर बैज (1906-1980) भारतीय मूर्तिकार थे, जिनका कार्य भारतीय चित्रकला और स्थापत्य कला में मील का पत्थर माना जाता है। उन्होंने अपनी मूर्तियों में भारतीय ग्रामीण जीवन, कृषक संघर्ष और लोक संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया।

रस सिद्धांत का प्रयोग: उनकी मूर्तियाँ में वीर रस और करुणा रस का स्पष्ट प्रभाव था। बैज ने अपनी कृतियों में ग्रामीण जीवन के संघर्ष और स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीकों को जीवित किया, जो जनता को अपने स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ते थे।

कला का उद्देश्य: रामकिंकर बैज का कला कार्य उस समय के समाजवादी दृष्टिकोण और आंदोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा था। उनकी मूर्तियों ने स्वतंत्रता संग्राम के समय में राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक जागरूकता का संदेश दिया।

5. **पं. रविशंकर राव (Pandit Ravi Shankar Rao)**

विषयवस्तु और कला शैली: पं. रविशंकर राव (1890-1967) भारतीय चित्रकला के एक और महत्वपूर्ण कलाकार थे जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपनी कला के माध्यम से राष्ट्रीयता को प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपनी कृतियों में रहट और वीरता, राष्टीय संघर्ष, और भारतीय संस्कृति को प्रमुख विषयों के रूप में चित्रित किया।

रस सिद्धांत का प्रयोग: उनकी कृतियों में वीर रस का विशिष्ट समावेश था, जिसमें भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई और संघर्ष को चित्रित किया गया था। उनका उद्देश्य दर्शकों को राष्ट्रीय एकता के भाव में एकजुट करना था।

कला का उद्देश्य: पं. रविशंकर राव की कला ने स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रवादी चेतना को जागरूक करने का कार्य किया। उनकी कृतियों ने आम जनता में संघर्ष और प्रतिरोध का भाव उत्पन्न किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कलात्मक स्वतंत्रता का प्रभाव और योगदान

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक लंबा और संघर्षपूर्ण अभियान था, जिसमें देशवासियों ने न केवल राजनीतिक और सैन्य मोर्चे पर संघर्ष किया, बल्कि सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टिकोण से भी अपनी स्वतंत्रता की भावना को प्रकट किया। इस समय, कला ने एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में कार्य किया, जो भारतीय जनता को जागरूक करने, एकजुट करने और साम्राज्यवादी शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कलात्मक स्वतंत्रता का प्रभाव:

1. **राष्ट्रीय चेतना का जागरण:** स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कला ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कलाकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, धरोहर और स्वतंत्रता की आवश्यकता को व्यक्त किया। कला के रूप में चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत और नृत्य ने जनता में देशभक्ति की भावना को जागृत किया और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। विशेष रूप से, अबानिंद्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस और रविंद्रनाथ ठाकुर जैसे कलाकारों ने स्वदेशी शैलियों को बढ़ावा दिया और भारतीय संस्कृति के महत्व को रेखांकित किया।
2. **ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ कला का संघर्ष:** भारतीय कला ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विरोध का एक सशक्त रूप लिया। चित्रकला, पोस्टर और अन्य कलात्मक रूपों का उपयोग ब्रिटिश शासन के खिलाफ एकजुटता और विद्रोह की भावना फैलाने के लिए किया गया। जैसे-जैसे स्वतंत्रता संग्राम का उत्साह बढ़ा, कलाकारों ने अपनी कृतियों में स्वतंत्रता की कल्पना और ब्रिटिश शोषण के खिलाफ गहरी नाराजगी व्यक्त की। इन कलात्मक कृतियों ने जनमानस में संघर्ष की भावना को जीवित रखा और उन्हें स्वतंत्रता की ओर प्रेरित किया।
3. **स्वदेशी आंदोलन और कला का योगदान:** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वदेशी आंदोलन ने भी कला को एक शक्तिशाली साधन बनाया। स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार-प्रसार करने के लिए कलाकारों ने चित्रकला का उपयोग किया और इसके माध्यम से ब्रिटिश वस्त्रों के खिलाफ विरोध जताया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में जो आंदोलन चला, वह न केवल राजनीतिक बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी प्रेरित था, जिसमें कला का महत्वपूर्ण योगदान था। स्वदेशी कला ने भारतीय समाज में राष्ट्रीयता और आत्मनिर्भरता का संदेश फैलाया।

कलात्मक योगदान:

1. **चित्रकला और लघु चित्रकला:** चित्रकला ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कलाकारों ने स्वतंत्रता संग्राम के महान नेताओं की तस्वीरें बनाई, जिनसे जनता में उत्साह और प्रेरणा

मिली। इसके अलावा, कलाकारों ने भारतीय इतिहास, संस्कृति और परंपराओं को चित्रित किया, जिससे भारतीय जनमानस में एकजुटता का संदेश मिला। अबानिंद्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस, और रविंद्रनाथ ठाकुर ने स्वदेशी शैली में चित्रकारी की, जिसने ब्रिटिश कला शैलियों का विरोध किया और भारतीय कला को एक नई पहचान दी।

2. **मूर्तिकला और वास्तुकला:** मूर्तिकला और वास्तुकला भी स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका निभाने में पीछे नहीं रही। भारतीय संस्कृति और धार्मिकता का चित्रण करने वाली मूर्तियाँ और मंदिर निर्माण ने भारतीय जनता में अपनी धरोहर को लेकर गर्व की भावना जगाई। यह कला ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एक सांस्कृतिक विद्रोह का रूप ले रही थी। विशेष रूप से, भित्तिचित्रों और मूर्तियों के माध्यम से कलाकारों ने भारतीय संस्कृति के महत्व को दर्शाया।
3. **संगीत और नृत्य:** भारतीय संगीत और नृत्य का भी स्वतंत्रता संग्राम में गहरा योगदान था। महात्मा गांधी और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने राष्ट्रीय गीतों और भजनों के माध्यम से जनमानस को जागरूक किया और उन्हें संघर्ष में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। संगीत और नृत्य ने स्वतंत्रता संग्राम को सांस्कृतिक रूप से भी एकजुट किया, जिससे जनजातियों और विभिन्न सांस्कृतिक समूहों में एकता का संचार हुआ।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कला ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने केवल राजनीतिक संघर्ष को ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक संघर्ष को भी प्रेरित किया। कला ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं और कार्यकर्ताओं के संदेश को जन-जन तक पहुँचाया, बल्कि इसने भारतीय जनता में सांस्कृतिक जागरूकता, देशभक्ति, और एकता की भावना को भी उत्पन्न किया। कला ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ विरोध और स्वतंत्रता की ओर बढ़ने के लिए भारतीय समाज को एक नई दिशा दी, और यह स्वतंत्रता संग्राम के एक अभिन्न अंग के रूप में उभरी।

निष्कर्ष:

इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कलाकारों के कार्यों में रस सिद्धांत का गहरा प्रभाव था, जिसने भारतीय जनता में भावनात्मक जुड़ाव और राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। इन कलाकारों ने कला को केवल सौंदर्य के रूप में नहीं, बल्कि एक राजनीतिक और सांस्कृतिक साधन के रूप में प्रस्तुत किया। विशेष रूप से, अबानिंद्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बोस, रामकिंकर बैज और सरोजिनी नायडू जैसे कलाकारों की कृतियाँ न केवल दृश्य सौंदर्य का माध्यम थीं, बल्कि उन्होंने सांस्कृतिक चेतना और भाव जागरण को भी प्रेरित किया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम में एक नए उत्साह और एकजुटता का संचार हुआ।

इस शोध ने यह भी सिद्ध किया है कि कलाकारों ने रस सिद्धांत का उपयोग करते हुए अपनी कला के माध्यम से न केवल राजनीतिक संदेश दिए, बल्कि जनता में भावनात्मक बदलाव और जागरूकता भी उत्पन्न की। अबानिंद्रनाथ ठाकुर और नंदलाल बोस जैसे प्रमुख कलाकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से भारत की संस्कृति और संघर्षों का चित्रण किया, और साथ ही राष्ट्रीय चेतना और एकता को जागृत किया। अंततः यह शोध यह रेखांकित करता है कि इन कलाकारों ने दृश्य कला के माध्यम से एकजुटता और राष्ट्रीय चेतना को प्रेरित किया और रस सिद्धांत का प्रभावी रूप से उपयोग करके लोगों को एक भावनात्मक स्तर पर जोड़ने में सफलता प्राप्त की।

संदर्भ / पुस्तक सूची:

1. भारत मुनी. *नाट्यशास्त्र* (अनुवाद - एम. एल. वरदापांडे). भारतीय कला प्रकाशन, 2014।
2. ठाकुर, अबानिंद्रनाथ. *भारत में आधुनिक कला*। भारतीय पुस्तक निगम, 1958।
3. बोस, नंदलाल. *राष्ट्रीय आंदोलनों में कला की भूमिका*। भारतीय कला और संस्कृति संस्थान, 2002।
4. बनर्जी, पार्थ. "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कला और पहचान।" *भारतीय इतिहास और संस्कृति पत्रिका*, खंड 18, अंक 2, 1998, पृष्ठ 132-145।
5. नायर, सुजाता. *औपनिवेशिक भारत और सांस्कृतिक पहचान का उदय: कला की भूमिका*। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 2017।
6. घोष, पार्थ. "रस सिद्धांत और दृश्य कला: राष्ट्रीयकृत कथाओं में भावनात्मक अंतराल को पाटना।" *भारतीय कला पत्रिका*, खंड 31, अंक 4, 2015, पृष्ठ 203-218।
7. कपूर, अनिल. "भाव जागरण और राष्ट्रीय आंदोलनों: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में दृश्य कला की भूमिका।" *एशियाई कला और संस्कृति*, खंड 40, अंक 1, 2019, पृष्ठ 91-106।